मशरूम से गंभीर मनोरोग का इलाज संभव

एनोरोक्सिया एक गंभीर मनोरोग है जिसमें एक प्रकार का डाइटिंग डिस्ऑर्डर हो जाता है। जिन लोगों को एनोरोक्सिया होता है, वे स्वयं को भूखा रखते हैं ताकि उनका वजन ना बढ़ जाए। वे मोटापे के भय से पीड़ित होते हैं। सेनडिएगो में हुए एक अध्ययन द्वारा यह पता लगाया गया है कि मशरूम में मौजूद पोषक तत्वों साइकेडेलिक दवा से अब इस रोग का इलाज संभव हो गया है। मशरुम में सिलोसाइविन तत्व विद्यमान होता है, जो मस्तिष्क को सक्रिय रखता है। इस अध्ययन में 10 लोगों को शामिल किया गया। उन्हें संश्लेषित गोली के रूप में मशरूम की अधिकतम खुराक दी गयी। इनमें से बहुत से लोग एनोरोक्सिया रोग से पीड़ित थे। इस अध्ययन के दौरान यह पाया गया कि जिन लोगों को मशरूम से बनी दवा दी जा रही थी, उनके खाने-पीने को लेकर सोच में परिवर्तन आया।

एनोरोक्सिया को सामान्यतौर पर एक मानसिक रोग माना गया है। इसके शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के लक्षण हो सकते हैं। इस डिस्ऑर्डर से ग्रस्त होने के कारण व्यक्ति अपने वजन और शरीर के आकार को नियंत्रित करने के लिए प्रयास करता है। इस कारण कई अन्य गंभीर रोग भी शरीर में लग जाते हैं। कई बार वजन नियंत्रित करने के लिए व्यायाम, योग आदि का सहारा लिया जाता है,जो शरीर के बहुत ही खतरनाक साबित होता है। शरीर में पोषक तत्वों की कमी

होने के कारण थकान, कमजोरी, मांसपेशियों की समस्या, रक्तचाप, चक्कर, हाथ-पैरों का ठंडा होना, बालों का झड़ना, मासिक धर्म में समस्या होना, अनिद्रा जैसे कई प्रकार की परेशानियां उत्पन्न हो जाती हैं। इन सब लक्षणों के द्वारा इस रोग की पहचान की जा सकती है।

वैज्ञानिकों द्वारा एक अध्ययन में यह भी बताया जा रहा है इस रोग के इलाज के लिए वाइव ट्रैकर(वीआर) जैसा उपकरण तैयार किया गया है जो कि इस रोग से निजात पाने में सहायक होगा।

पनामा रोग से 99% केलों की फसल को खतरा

दुनियाभर में 99 प्रतिशत केलों की फसल में टीआर 4 कवक का खतरा मंडरा रहा है। अभी तक 20 से अधिक देशों में यह रोग फैल चुका है। इस रोग से केले की बागवानी पूरी तरह से चौपट हो जाती है और किसानों को भारी आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है। कोरोना महामारी ने जिस तरह मानव अस्तित्व को चिंता में ला दिया था ठीक उसी तरह से केले की फसल में यह रोग महामारी बनकर उभर रहा है। इसने केले के अस्तित्वता को खतरे में डाल दिया है।

किसान और शोधार्थी फसल की ऐसी स्थिति से चिंता में हैं और इस रोग से बचाव के उपायों पर लगातार कार्य कर रहे हैं। यह रोग, लक्षण दिखने से पहले ही पौधे में फैल जाता है। पौधे पर प्रकोप होने पर इस रोग को रोकना असम्भव हो जाता है। इस रोग में केले के पत्ते हरे रंग के मुकाबले अधिक पीले और किनारे काले पड़ जाते हैं।

सबसे पहले इस रोग को 1950 के दशक में देखा गया था। इसे सबसे खराब वनस्पति महामारियों में से एक माना गया है। पिछले दशक के दौरान इस महामारी में अचानक तेजी आ गयी। इसका विस्तार एशिया से ऑस्ट्रेलिया, मध्य-पूर्व, अफ्रीका और वर्तमान में लैटिन अमेरिका तक हो चुका है। यह रोग टीआर 4 कवक के संक्रमण से होता है। दुनियाभर के वैज्ञानिक आनुवंशिक रूप से संशोधित केले के माध्यम से इस रोग के निवारण के लिए टीका बनाने का अथक प्रयास कर रहे हैं। इस प्रयास में ऑस्ट्रेलिया के वैज्ञानिकों ने आनुवंशिक रूप से संशोधित 'कैवेंडिश केले' को विकसित किया है। केले की यह किस्म टीआर 4 कवक की प्रतिरोधी है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लखनऊ स्थित बागवानी अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने फयुजीकोंट नामक जैविक फफूंद का विकास किया है और यह इस कवक को रोकने में सक्षम है।

स्ट्रॉबेरी खाने से होगा वृद्धावस्था में भी मस्तिष्क का विकास

हाल ही में एक अध्ययन के अनुसार यह पता चला है कि स्ट्रॉबेरी को प्रतिदिन खाने से विशेष तौर पर लोगों के मस्तिष्क का विकास होता है इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट तत्वों द्वारा रक्तचाप को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

सेंड डिएगो स्टेट यूनिवर्सिटी में किए गए एक शोध में ऐसी महिलाओं और पुरुषों को शामिल किया गया, जिनकी आयु 66 वर्ष से 78 वर्ष थी इनमें से प्रत्येक प्रतिभागी को 26 ग्राम सूखा स्ट्रॉबेरी पाउडर खाने को दिया गया।

यह पाउडर प्रतिदिन स्ट्रॉबेरी की दो सर्विंग के बराबर था इस स्ट्रॉबेरी पाउडर का लगातार सेवन प्रतिदिन 8 सप्ताह तक करवाया गया। इसका निष्कर्ष यह निकला कि इसके सेवन से उनके मस्तिष्क के विकास में 5.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

सेनडिएगो स्टेट यूनिवर्सिटी में स्कूल ऑफ एक्सरसाइज एंड न्यूट्रिशन साइंसेज के प्रोफेसर का कहना है कि स्ट्रॉबेरी अनेक प्रकार के बायोएक्टिव यौगिकों का स्रोत है और इसके सेवन से विशेषकर वृद्धावस्था के लोगों को बहुत लाभ पहुंचा है।